अभ्यास पत्रक

पाठ – रैदास के पद

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. पद्यांश पढ़िए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (1x3=3 अंक)

''प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।''

1. कवि ने यहाँ प्रभु और अपने बीच किस प्रकार की तुलना की है?

उत्तर - .....

.....

2. 'बास समानी' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - .....

.....

3. 'प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

2. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सही विकल्प चुनिए – (Assertion-Reason) (1x2=2 अंक)

प्रश्न 4: Assertion (कथन): रैदास के अनुसार भगवान सच्चे भक्त को जाति-पाँति से ऊपर उठाकर अपनाते हैं।
Reason (कारण): भगवान नामदेव, कबीर, तिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों को अपनाकर उन्हें सम्माननीय बनाया।
(क) A: सही, R: सही, R सही कारण है
(ख) A: सही, R: सही, R सही कारण नहीं है
(ग) A: सही, R: गलत
(घ) A: गलत, R: सही

प्रश्न 5: Assertion (कथन): रैदास ने प्रभु को दीपक कहा है।
Reason (कारण): क्योंकि दीपक से प्रकाश नहीं बल्कि अंधकार फैलता है।
(क) A: सही, R: सही, R सही कारण है
(ख) A: सही, R: सही, R सही कारण नहीं है
(ग) A: सही, R: गलत
(घ) A: गलत, R: सही

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

6. 'गुसईआ' और 'गरीब निवाजु' शब्दों का अर्थ क्या है? 1

उत्तर - .....

.....

7. कवि ने 'मोर' और 'चकोर' की तुलना किस भाव से की है? 2

उत्तर - .....

.....

.....

8. 'माथै छत्रु धरै' पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर - .....

.....

.....

9. रैदास किस प्रकार की भक्ति को श्रेष्ठ मानते हैं? 1

उत्तर - .....

.....

10. रैदास के पदों में ईश्वर को लेकर कौन-कौन से गुण दर्शाए गए हैं? 1

उत्तर - .....

.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में दीजिए – (2x2=4 अंक)

11. रैदास ने अपने आराध्य प्रभु से तुलना करते हुए किन प्रतीकों का प्रयोग किया है और उनका क्या प्रभाव है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. दूसरे पद में कवि ने भगवान की किस विशेषता को प्रमुखता दी है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक)

13. रैदास के पद' में भक्त और भगवान के बीच के संबंध को कवि ने कैसे प्रस्तुत किया है? उत्तर लगभग 100–120 शब्दों में दीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक)

14. रैदास के पदों में सामाजिक समानता और समरसता की भावना' विषय पर एक अनुच्छेद लगभग 160–180 शब्दों में लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. प्रभु को चंदन और स्वयं को पानी बताकर प्रभु की भक्ति से अपने एकाकार होने का भाव प्रकट किया है।
2. 'बास समानी' का अर्थ है – सुगंध का समा जाना, भक्ति का अंग-अंग में समा जाना।
3. यह पंक्ति बताती है कि जैसे दीपक की ज्योति बत्ती के बिना नहीं जलती, वैसे ही प्रभु की भक्ति बिना भक्त के अधूरी है।
4. (क)
5. (ग)
6. 'गुसईआ' – स्वामी, 'गरीब निवाजु' – गरीबों पर कृपा करने वाला।
7. मोर और चकोर प्रकृति के प्रति आकर्षण के प्रतीक हैं, जैसे भक्त प्रभु के प्रति आकर्षित होता है।
8. इसका अर्थ है – प्रभु के मस्तक पर राज्यचिह्न मुकुट सुशोभित है।
9. रैदास निराकार और समदर्शी प्रभु की भक्ति को श्रेष्ठ मानते हैं।
10. ईश्वर सर्वशक्तिमान, समदर्शी, दीन-दुखियों पर दया करने वाले, जात-पाँत से परे और भक्ति के आधार पर कृपा करने वाले हैं।
11. रैदास ने चंदन-पानी, दीपक-बाती, मोती-धागा जैसे प्रतीकों द्वारा बताया है कि प्रभु और भक्त का संबंध गहरा, अटूट और पूरक है। इससे प्रभु की महत्ता और भक्त की समर्पणशीलता झलकती है।
12. दूसरे पद में भगवान की समदर्शिता, दीन-दुखियों पर दया, जाति-भेद से ऊपर उठकर सबको अपनाने की विशेषता प्रमुख है।
13. रैदास ने अपने पदों में भगवान को सर्वोपरि बताया है। उन्होंने भक्त और प्रभु के रिश्ते को चंदन-पानी, दीपक-बाती, मोती-धागा आदि से समझाया है। यह दर्शाता है कि भक्त प्रभु के बिना अधूरा है और दोनों का संबंध एक-दूसरे के बिना संभव नहीं। कवि बताता है कि जब एक बार भक्ति का रंग चढ़ जाए, तो वह कभी उतरता नहीं। रैदास की भक्ति आत्मसात की अवस्था है, जो हर क्षण प्रभु को अनुभव करती है। यह भक्ति समर्पण और निष्ठा का प्रतीक है।
14. रैदास के पदों में सामाजिक समानता का संदेश बहुत स्पष्ट है। वे कहते हैं कि ईश्वर के सामने सब समान हैं, वह किसी की जाति, कुल या धन नहीं देखता, बल्कि केवल भक्ति को महत्व देता है। रैदास ने उदाहरण के रूप में उन संतों का उल्लेख किया है जो समाज में निम्न समझे जाते थे, लेकिन भगवान ने उन्हें अपनाया और उन्हें सम्मान दिलाया। उनका कहना है कि भगवान कभी किसी में भेद नहीं करते, चाहे वह उच्च कुल का हो या निम्न जाति का। रैदास की रचनाएँ जातिगत भेदभाव के विरुद्ध विद्रोह हैं। वे अपने पदों के माध्यम से लोगों को यह समझाते हैं कि भक्ति का मार्ग सभी के लिए समान है और भगवान केवल प्रेम और समर्पण के भूखे हैं। यह संदेश आज के समाज में भी उतना ही प्रासंगिक है।